ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 234 अप्रैल 2023

शत-शत नमन

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 234
अप्रैल 2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	Right to Health and Malpractices in Medical Profession A Socio-Legal Study with Special Reference to India	Dr. Pawan Kumar/Vandna	04
3.	सन् 2000 पश्चात चयनित हिन्दी नाटकों में नारी : चेतना और खमोश नहीं है नारी नाटक के विशेष संदर्भ में	निलेश कुमार देवजीभाई (शोधार्थी) डॉ. जशवंतभाई पंडया (शोध निदेशक)	08
4.	हिन्दी सोवियत संघ परिवार की भाषा	डॉ. श्रवण कुमार	11
5.	Critical Study of relation between Aggression and Academic Achievement among the Adolescent Students	Dr. Kavita Maruti Ghughuskar Dr. Kailas Ramesh Khonde	14
6.	Innovative Practices in Teacher Education	Dr. Rajkumari Gola	20
7.	भीम ने करी पढ़ाई ऐसी	बी.एल. परमार	26

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

''डॉ. अम्बेडकर भारतीय सरकार का लेबर–मेम्बर है। वह भारत के चुने हुए छः सर्वश्रेष्ठ दिमागों में से एक है, वह एक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ है, जिसे आसानी से संतुष्ट किया ही नहीं जा सकता। जब वह सार्वजनिक सभा में भाषण देता है तो वह बिजली के समान तीखा, विचारोत्तेजक तथा विपक्षी का मुंह बंद कर देनेवाली विषय से सर्वथा सम्बद्ध बातें करता है।'' बेवरले निकोलस।

भारत का भविष्य अम्बेडकर में ही है। वे एक युगदृष्टा थे, वे एक व्यवहारिक व यथार्थवादी चिंतक थे। उन्होंने एक ऐसे सामाजिक प्रारूप की रचना की जिसका आधार समता, स्वतंत्रता व बंधुत्व था जिसमें सभी को स्वतंत्रता हो, सभी को शिक्षा एवं रोजगार के समान अवसर हो और सभी को विचार अभिव्यक्ति एवं विश्वास की पूरी आजादी हो। निरंतर बढ़ती सामाजिक व आर्थिक विषमता, भेदभाव व साधन सम्पन्न और साधनहीन के बीच बढ़ती खाई के कारण जिस चौराहे पर हम खड़े हैं, वहाँ से आगे जो दिशा दिखाई दे रही है, वह अम्बेडकर के दर्शन की ओर जाती है।

अपने समय के सबसे ज्यादा शिक्षित व्यक्ति बनकर डॉ. अम्बेडकर ने भारत के सामाजिक, राजनीतिक पटल पर एक जबरदस्त दस्तक दी। उनकी दस्तक की गूंज तब सुनाई दी जब उन्होंने द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस में ललकारा। डॉ. अम्बेडकर की पहचान ऐसे व्यक्ति के रूप में हो चुकी थी जो कि न केवल कानूनी एवं संवैधानिक विषयों के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ थे, बल्कि भारत में एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो भारतीय संविधान का प्रारूप बनाने में सक्षम थे। सामाजिक रूप से घृणास्पद, आर्थिक रूप से विपन्न, सांस्कृतिक रूप से उपेक्षित, राजनीतिक तौर पर नपुंसक व सभी प्रकार के मानवाधिकारों से वंचित करनेवाली हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ अछूतों को प्रेरित करनेवाले डॉ. अम्बेडकर एक ऐसे नेता थे जिन्होंने हजारों सालों से मूक एवं वंचित जनता को बोलना सिखाया। डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व के विभिन्न मॉडलों पर यदि उनके नेतृत्व का विश्लेषण किया जाये तो वह युगांतकारी नेता के रूप में सामने आते हैं।

बदलते हुए समय को पहचानते हुए उन्होंने भारतीय समाज का आव्हान किया कि कुछ भी स्थिर नहीं है, कुछ भी शाश्वत नहीं है और न ही कुछ सनातन है। प्रत्येक चीज परिवर्तनशील है, व्यक्ति ओर समाज के लिये परिवर्तन जीवन का नियम है।

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर मूल्य आधारित नेतृत्व के पक्षधर थे। उनका मिशन ऐसे समाज की स्थापना करना था जो समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों में विश्वास रखता है। उनका नेतृत्व एक ऐसा नेतृत्व था जिससे करोड़ों निरीह, बदतर व स्वयं को इंसान न समझने वाले अछूतों को अन्याय के विरुद्ध संघर्षशील समाज के रूप में बदल डाला। उन्होंने निम्न समझी जानेवाली जातियों की महिलाओं को जागरुक कर उनमें आत्म–सम्मान और विश्वास के भाव जगाये। बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर जनता के आदमी थे, उनकी जनता गरीब, अशिक्षित और कमजोर थी। वे एक बात जानते थे कि वह इस जनता को शक्तिशाली बनाकर ही समाज को बदल सकते हैं। उन्होंने दलित जनता को राजनीति, समाज ओर शिक्षा के कार्यों में बराबर शामिल किया। उन्होंने अपने आन्दोलन को पीछे न जाने देने की अपील किसी नेता विशेष से नहीं करके अपनी अनुयायी जनता से ही की है।

वर्तमान सामाजिक तनावों को समझने के लिये जाति व्यवस्था की कुछ और गहरी जांच जरूरी है। डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था को श्रद्धा की आरोहक सीढ़ी और तिरस्कार को अवरोधक सीढ़ी कहा था। जहाँ इतिहास बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर को उनके बहुपक्षीय व्यक्तित्व और न्यायविद, संविधान शिल्पी, विचारक, लेखक और विवेकी, एक महान राजनीतिक संगठनकर्ता के रूप में उनके बहुपक्षीय योगदानों के लिये याद करेगा, वहीं उन्हें सर्वोपरि एक महान और संवेदनशील सामाजिक विद्रोही, एक लड़ाकू सुधारक और इस उपमहाद्वीप के पद दलितजनों के मुक्तिदाता के रूप में याद किया जायेगा।

आज हमारे बीच में बाबासाहेब नहीं है, लेकिन उनके विचारों की प्रासंगिकता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। आज देश की हर ज्वलंत समस्या का समाधान उनके दर्शन में है। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी भारतरत्न बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर को उनकी 132वीं जयंति के अवसर पर शत–शत नमन.....

जय भीम!

– डॉ. तारा परमार

RIGHT TO HEALTH AND MALPRACTICES IN MEDICAL PROFESSION : A SOCIO-LEGAL STUDY WITH SPECIAL REFERENCE TO INDIA

- Dr. Pawan Kumar

- Vandna

ABSTRACT :

Presently Right to health is the major and burning issue of the whole world especially for developing nations. Now a day's many countries including India are facing various malpractices in the medical profession. So this article aims to discuss the matters of improper protocol and practices used by healthcare providers. Through this article, a researcher wants to show how malpractices are increasing day by day in India and other countries and what are socio-legal aspects which help to eradicate this malpractice in the medical profession. The purpose of this research is to explain that how medical professionals not only doctors are swindling money from the patients with the aid of various medical malpractices. That's why it is very important to discuss the right relating to Health because its importance is equal to other fundamental rights of the Constitution.

INTRODUCTION :

Right to health performs a very important role in every country. Presently according to a situation in India the Right relating to health is a more dominating right than others. It is rightly written by American philosopher Ralph Waldo Emerson in 1860 that "The first wealth is Health. If a person is not having proper health and also there are no proper remedies or right for protection of same then there is no fun of having so many fundamental rights in the Constitution. Currently, there are two professional sectors in which there is hidden malpractice firstly is Medical Profession and secondly is Legal Profession. Among two the most dominating is Malpractice in Medical Profession. The medical profession is known for its selfless services.

The relation between doctor and patient is the relation of trust and respect. But in reality, this noble professional has changed his way from moral values to money values. Presently doctors are giving more emphasis on money by adopting corrupt practices which directly or indirectly affect the patients. No importance is given to the feelings, financial status, and helplessness of patients. The purpose of this study is not to defame the medical profession but this

is a harsh reality which people are facing in every moment of their life.

MEANING AND DEFINITION OF MEDICAL MALPRACTICE

The word medical negligence and medical malpractice both are related to each other but their meaning is different. When we talk about malpractice in the medical profession, then to some extent there is also the reference of medical negligence. Firstly doctors practiced some negligent acts to do malpractice. The law of medical malpractice is an outgrowth of the general body of negligence law.[1] Medical Negligence means that you failed to do something that you should have done but on the other hand medical malpractice means medical practitioner acts negligently, intentionally, and want only while treating patients to gain profits.[2] So from the above meaning of malpractice, it is clear that it also includes some negligent acts to commit various malpractices in the medical field and it is professional misconduct or unreasonable lack of skill by the practitioners in the field of medicine. A medical malpractice lawsuit is built on the foundation of four main elements. By applying these elements to a particular case, an individual can gain a deeper understanding of the situation.[3]

DUTY : For proving medical malpractice, a person first has to prove that there is a legal duty that exists in the favor of doctors for the care and treatment of patients.[4]

- **BREACH.** After that person will need to establish that the duty was breached and the physician failed to fulfill his obligations to the patient. This often requires expert testimony as to the expected practices in similar situations.[5]

- **CAUSATION.** It is very important to establish a link between the breach of duty and the injury. The victim will have to prove that the breach was the ultimate cause of the injury.[6]

- **DAMAGE.** Finally, the person will need to show that damage was done. Without damages whether it is emotional or pecuniary person cannot demand any type of malpractice claim.[7]

LEGAL AND CONSTITUTIONAL ASPECT OF MEDICAL MALPRACTICE

In India, there is no direct law, which governs medical malpractice. Earlier and till now the law which governs malpractice in the medical profession has its origin in Common Law and the concept of the negligence of law of Torts.[8] These laws provide redressed

an aggrieved person with some other avenues. If we say that there is plain law that determines liability under medical malpractice then the answer is no. In India there are some civil and criminal laws which deal with cases of medical malpractices. The Supreme Court of India also through its various landmark judgments gave wide interpretation to the concept of negligence and tried to determine the liability of medical professionals in the cases of medical malpractices and gave various guidelines relating to the liability of Doctors in India. Various civil and criminal laws are as follows:

THE CONSUMER PROTECTION ACT 1986 : The Act protects a consumer's interests not only when he buys goods and services for everyday use, but also when he goes to a medical expert for treatment.[9] In the landmark judgment of Indian Medical Association V. V.P Shantha,[10] Supreme Court held that:

➢ Service rendered to a patient by a medical practitioner in the form of consultation, diagnosis, and treatment, both medicinal and surgical, would fall within the ambit of service as defined in section 2(1) (o) of the Act (except where the doctor renders service free of charge to every patient or under a contract of personal service). Sec 2(1) (o) presently Sec 2 (42) of Consumer Protection Act provides that the definition of Services.

➢ The fact that medical practitioners are members of the medical profession and are subject to the disciplinary oversight of the Medical Council of India and/or State Medical Councils established under the Indian Medical Council Act does not mean that the services they provide are outside the scope of the Act.

Apart from Civil Liability the criminal liability of Doctors can also be fastened under the **Indian Penal Code, 1860**.[11] However, the IPC does not expressly deal with "medical negligence," rather the provisions are generic. For instance, Section 304A of the Indian Penal Code (which deals with the death of a person by any rash or negligent act and carries a maximum sentence of two years in prison) applies to cases of causing death due to negligent driving of a motor vehicle and medical negligence resulting in the death of a patient. Similarly other general provisions of the Indian Penal Code such as Section 337(causing hurt) and 338(causing grievous hurt), are also frequently invoked in medical negligence cases.[12]

The Indian Medical Council Act, 1956, the Dentists Act, 1948, the Medical Termination of Pregnancy Act, 1971, the Preconception and Prenatal Diagnostic Techniques (Regulation and Prevention of Misuse) Act, 1994, the Transplantation of Human Organs Act, 1994, are other penal laws enacted by the Parliament and State legislatures from time to time may all result in criminal liability.[13]

The Constitution of India has also some rights and implicit provisions which indirectly protect the Rights relating to health. Such as Article 21, 32, 39, 41, 42, 47 and 243G.

CONCLUSION AND SUGGESTIONS

In India, all earnings of a common person are spent either in education or in curing the diseases and no person is certain about his health, So in India, Right to health and protection and development of this right is very important. Many laws ensure the protection of health but they are all just showpieces, there is no proper implementation of these laws, which is in dire need of the present hour. Many policies and facilities are provided by the government such as (Ayushman Bharat Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana) for the people but they never access the benefits of schemes due to lack of awareness among them. Just for the sake of money, medical practitioners are playing with the fear and emotions of the people. Some of the suggestions which will help in curbing the menace of malpractice in the medical profession are as follows:

- Proper interpretation and enforcement of the Right to health should be given.
- Separate or independent law on Medical Malpractice is required.
- Strict reforms in the management of government hospitals.
- Enhancement in the number of government hospitals.
- Reforms in the Indian Medical Council Act 1956.
- Proper vigilance on the doctors, hospitals, and path labs.
- Forbidding government doctors for running their private clinics.
- The dire need for the regulation of private hospitals.

- Dr. Pawan Kumar
Professor and Head
Gurunankdev Univercity, Amritsar
Mob. : 9814999930

- Mrs. Vandana Sharma
Assistant Professor
Gurunankdev Univercity
Amritsar (Punjab)
Mob. : 8847339298

References :

1. Pulyapudi Srinivas, "Impact of Medical Mal-Practice in India" International Journal of Modern Engineering Research (IJMER) Vol.3, Issue.1, Jan-Feb. 2013 pp-30-44 Retrieved from http://www.ijmer.com/papers/Vol3_Issue1/AF313044.pdf visited on December 22, 2021

2. ibid

3. Tremont Sheldon PC, "four elements of medical malpractice explained" Retrieved from: https://www.tremontsheldon.com/articles/four-elements-ofmedical-malpractice-explained/ visited on December 22, 2021

4. ibid

5. ibid

6. Pulyapudi Srinivas, "Impact of Medical Mal-Practice in India" International Journal of Modern Engineering Research (IJMER) Vol.3, Issue.1, Jan-Feb. 2013 pp-30-44 Retrieved from http://www.ijmer.com/papers/Vol3_Issue1/AF313044.pdf visited on December 22, 2021

7. ibid

8. Shaheen Waraich Rukhsana, "Medical Malpractice: An Analytical Study in the Light of Shariah & Law" Retrieved from http://prr.hec.gov.pk/jspui/handle/123456789/13390 visited on December 23, 2021

9. ibid

10. AIR 1996 SC 550

11. Amit Agrawal, "Medical Negligence: India Legal Perspective" Retrieved from https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5109761/ visited on December 24, 2021

12. Amit Agrawal, "Medical Negligence: India Legal Perspective" Retrieved from https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5109761/ visited on December 24, 2021

13. Shaheen Waraich Rukhsana, "Medical Malpractice: An Analytical Study in the Light of Shariah & Law" Retrieved from http://prr.hec.gov.pk/jspui/handle/123456789/13390 visited on December 24, 2021

सन् 2000 पश्चात के चयनित हिन्दी नाटकों में नारी : 'चेतना' और 'खमोश नहीं है नारी' नाटक के विशेष संदर्भ में

– निलेश कुमार देवजीभाई गामीत (शोधार्थी)

प्रस्तावना :

मनुष्य जीवन स्त्री और पुरूष दोनों से बना है लेकिन समाज का उनकी ओर देखने का दृष्टिकोण अलग–अलग है। पारिवारिक जीवन में पुरुष और स्त्री दोनों उतने ही उपयोगी हैं जितने रथ के दो पहिये। एक उपयोगी तथा सफल रथ के लिए दूसरी आवश्यक वस्तुओं के साथ ही साथ पहिये भी अपना विशेष महत्व रखते हैं। यदि किसी रथ का पहिया निर्बल तथा जर्जर है तो दूसरा पहिया भी किसी काम का नहीं रहता और धीरे–धीरे रथ का अस्तित्व भी मिट जाता है। ठीक इसी प्रकार पारिवारिक जीवन में पुरूष तथा नारी की समानता अति आवश्यक है। इन दोनों में से किसी एक के निर्बल तथा अशक्त हो जाने से समाज का अस्तित्व भी अनिश्चित सा हो जाता है क्योंकि दोनों के योगदान से ही समाज का निर्माण होता है तथा उसमें स्थिरता आती है।

भारतीय समाज और नारी :

नारी को निर्बल बनाने में हमारे समाज का पूरा–पूरा हाथ है । राष्ट्र कवि मैथेलीशरण गुप्त ने अपनी दो पंक्तियों मे ही वर्तमान नारी के जीवन का चित्र स्पष्ट किया है –

अबला जीवन, हाय ! तुम्हारी यह कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

न जाने कब से भारतीय नारी इस दर्द भरी कहानी को अपने आँचल में छिपा कर बैठी है। यह सबला होते हुए भी 'अबला' कहलाती है। पुरुष को वह जन्म देती है, बाल्यावस्था में उसे उंगली पकडकर चलना सिखाती है। समयानुसार उसकी देखरेख करती है। परंतु वह पुरुष बडा होकर ऐसी दया की मूर्ति के साथ कठोर

व्यवहार करता है। पुरूष द्वारा पग–पग पर अपमानित होती है इसलिए उसकी आँखों से प्रायः जल की धारा बहती रहती है।

वास्तव में गृहस्थाश्रम की सफलता नारी पर आधारित है इसलिए वह प्राचीन काल में प्रतिष्ठित पद पर विराजमान थी । मनु ने भी अपने ग्रंथ 'मनुस्मृति' में लिखा है –

यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्र तास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्तत्राफलाः क्रियाः।।

प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्र में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। महिलाओं की स्थिति में मध्यकालीन काल के दौरान अधिक गिरावट आई जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह, और विधवा पुनः विवाह पर रोक लगा दी गई ।

हिन्दी नाटकों में नारी :

हिन्दी सहित्य में आदिकाल से लेकर आज तक स्त्री के अनेक रूपों का वर्णन मिलता है। साहित्य में उसे अनेक रूपों मे देखा गया है। प्रसाद ने उसे श्रद्धा की उपमा दी तो पंत ने नारी को सहचरी कहा। निराला ने स्त्री मे शक्ति रूप देखा तो महादेवी ने उसे करुणा के रुप में देखा।

भारतेन्दु ने हिन्दी नाट्य साहित्य को गति प्रदान की। भारतेंदु के युग में नारी की स्थिति बडी दयनीय थी, उसे हीन दृष्टि से देखा जाता था। उसकी उपेक्षा की जाती थी तथा शिक्षा से वंचित रखा जाता था। भारतेंदु ने अपने नाटक 'नीलदेवी' में नारी का एक सशक्त रूप हमारे सामने पेश किया।

प्रसाद युग में स्त्री की स्वतंत्रता और स्त्री शिक्षा का द्वंद्व भारतेंदु युग के समान चल रहा था लेकिन फिर भी स्त्री के स्वयं के अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरुकता बढी। धीरे–धीरे शिक्षा का महत्व बढ रहा था। प्रसादजी ने अपने नाटक 'धृस्वामिनी' में स्त्री की स्वतंत्रता, स्त्री–पुरूष के संबंध, विधवा–विवाह जैसी समस्याओं को उभारा ।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपने नाटक 'स्वर्ग की झलक' में शिक्षा से प्राप्त की गई प्रवृतिओं का विश्लेषण किया है। तथा स्त्री पर उसके पडने वाले कुप्रभावों को स्पष्ट किया है ।

वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक एवं सामाजिक नाटकों में स्त्री के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है । 21वीं सदी मे स्त्री उत्थान की बात की है तथा नारी के अधिकारों के प्रति जागरुकता को दर्शाया है ।

डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक 'गंगा माटी' की नायिका गंगा एक सुशिक्षित ब्राहमण कन्या है। वह अपने अधिकारों के प्रति पूर्णरुप से जागरुक है। वह अपनी गुलामी किसी प्रकार सहन नहीं कर सकती तथा गाँव की अनेक अबलाओं को उनके अस्तित्व की पहचान कराने के लिए आगे बढाती है।

गिरिराज किशोर के नाटक 'प्रजा ही रहने दो' की द्रौपदी जागरूक नारी है जो प्रदर्शिका और प्रेरणा के रूप मे अपने पति के सम्मुख प्रस्तुत होती है। जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में स्त्री का प्रेमिका का रुप उभरकर सामने आता है।

इक्कीसवीं सदी की स्त्री अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध साहस के साथ आवाज उठाये और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए सम्पूर्ण विश्व को प्रगति पथ की और ले जाए। तभी देश, समाज और राष्ट्र का विकास हो सकेगा ।

सन् 2000 पश्चात के हिन्दी नाटको में नारी :

ललितादेवी :

श्री मदनलाल शर्मा कृत 'चेतना' नाटक की नायिका ललितादेवी है। ललितादेवी कृष्णलाल की पत्नी है। पुरूष प्रधान समाज में ललितादेवी का जीवन अनेक समस्याओं से घिर जाता है। ललिता अपनी पहली संतान के रूप में लड़की को जन्म देती है तब उसके ससुराल में वह खुशी नहीं देखने को मिलती जो संतान प्राप्ति के समय परिवार में देखी जाती है। ललिता के सास–ससुर पुराने ख्यालात वाले है। उन्हें घर में लड़की

की जगह लड़का चाहिए। ताकि कुल का दीपक बन सके। दूसरी बार भी जब ललितादेवी पुत्री को जन्म देती है तो घरवाले उनसे मुँह फेर लेते है। परिवार में खुशी के बदले निराशा छा जाती है। इसीलिए ललितादेवी और पति कृष्णलाल अपनी छोटी बेटी ननंद को देकर उनका लड़का घर लाते है। घर में लड़की और लड़के के बीच भेदभाव होता है। ललितादेवी की बड़ी बेटी ममता और लड़का शुभम को लेकर आए दिन ललिता को सास–ससुर के ताने सहने पड़ते है। लड़की ममता पढ़ने में होशियार है उसकी छवि समाचार पत्र में छपती है वह क्षेत्र में अव्वल दर्जे पर आती है जबकि पुत्र शुभम 10वीं फैल हो जाता है।

सास–ससुर सारा कसूर ललिता पर लगाते है। इसी बहस के बीच पति–पत्नी में झगडा हो जाता है। और ललितादेवी घर छोड़कर चली जाती है।

ललितादेवी गृहिणी होने के साथ महिला प्रगति मंच की कार्यकर्ता भी है। समाज में होनेवाले महिलाओं पर अत्याचार के मुद्दों को उठाना, नारी को न्याय दिलाना उनकी समिति के कार्य है। ललिता घर छोड़कर दिल्ली नारी चेतना संगठन की अध्यक्ष बन जाती है। और नारी संघर्ष समिति की रचना कर समाज में पीडित नारियों को समाज में प्रतिष्ठा दिलाना उनके प्रति न्याय करना जैसे काम करती है।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने ममता के पात्र द्वारा समाज में फैले दहेज प्रथा, नारी उत्पीडन, अत्याचार, शिक्षा, पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता जैसी समस्याओं को उभारा है।

चंडिका

उमाकान्त खुबालकर कृत 'खामोश नहीं है नारी' नाटक की नायिका चंडिका है । चंडिका आधुनिक नारी है। वह जीवनभर संघर्ष करती है, किंतु हार नहीं मानती। अपने साथ हो रहे ससूर के अन्याय को सहने के बजाय वह उससे संघर्ष करती। चंडिका आज की आधुनिक संघर्षशील नारी का प्रतिनधित्व करती है। चंडिका एक ओर विनम्र है तो दूसरी ओर अपने उपर हो रहे अन्याय का सामना करने के लिए माँ दुर्गा का रूप धारण करती है।

एक दिन चंडिका अपने घर के आँगन में तुलसी के चौरे के पास रंगोली बनाती है। परंतु उनके ससूर काशीराम को चंडिका की कलात्मक सूझ पसंद नहीं है। वह चंडिका को सबके सामने अपमानित करते हुए गाली–गलोच करते है। काशीराम के सामने कोई ऊँची आवाज में बात नहीं करता, लेकिन बहू चंडिका उसका मुकाबला करती है। चंडिका बदलते जमाने के साथ ताल–मिलाकर चलनेवाली महिला है। काशीराम उसे मारने के लिए दौडते है लेकिन चंडिका उसका मुकाबला करती है। पूरे गाँव में काशीराम का डर फैला हुआ है लेकिन आजकल की आयी हुई बहु चंडिका काशीराम का खुलकर सामना करती है। चंडिका अपने उपर हो रहे अन्याय को गूंगी बनकर चार दिवारी के बीच घुट–घुटकर मरना नहीं चाहती, वह प्रतिकार करती है। चंडिका के माध्यम से नाटककार ने आज की संघर्षशील नारी का चरित्र उभारा है ।

इस प्रकार 'चेतना' और 'खामोश नही है नारी' नाटकों मे स्त्री का आधुनिक रूप देखने को मिलता है।

– निलेशकुमार देवजीभाई गामीत
शोधार्थी – पी-एच. डी.
मो. 83209 39889
– डॉ. जशवंतभाई पंडया
शोध निदेशक
सीनियर प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)–380009

संदर्भ सूची :

1. हिन्दी नाटक : उदभव और विकास – दशरथ ओझा
2. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों मे नारी की दशा एवं दिशा – डॉ. मीना पाण्डे
3. चेतना – श्री मदनलाल शर्मा
4. खामोश नहीं है नारी–उमाकांत खुबालकर
5. इन्टरनेट

हिन्दी सोवियत संघ परिवार की भाषा

– डॉ. श्रवण कुमार

प्राचीन भारतीय भाषाओं का प्रवाह शौरसेनी और पैशाची भाषा से है । भारत में ये भाषाएँ भूत भाषा, रक्ष भाषा के रूप में जानी जाती थीं, वैदिक संस्कृत का आविर्भाव भी यक्ष भाषा से ही हुआ है। यह भाषा परिवार की दृष्टि इण्डो यूरोपियन परिवार की भाषा है। महाभारत में 'यर्वाण तूर्वाण ऋषिय वभूवः' अर्थात् यवन और तूरमान ही ऋषि थे। यह पक्तून अर्थात् पठान, सिक्ख, जाटू, शक, यवन, सरदार, मलिक, तेगिन (ठाकुर) एवं ऋषि के रूप में जाने जाते थे

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यकशास्त्रमिद स्थितम् ।

ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विज ।।[1]

भारत में यवन जाति ही शास्त्रविद् थे, इनकी भाषा विलक्षण थी यह निर्घृण यक्ष थे। यह प्राचीनकाल में वेदज्ञ द्विज एवं ऋषियों की तरह पूजे जाते थे, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। प्राचीन भारत में पाणिनि एवं कायात्यायन के समय में 'यवनलिपि' प्रसिद्ध थी–

पाणिनि कात्यायनादि समकाले यवनानो शब्देन कस्याश्चिद् यवनलिपेः अत्र देशेऽपि प्रसिद्ध आसीत् ।।[2]

यवन आचार्य वराहमिहिर ने भारत में ज्योतिष शास्त्र का प्रणयन किया था। जिससे 12 राशियों का राशिफल बना था। जो भारतीय भाग्यवाद का आधार – ग्रंथ है । यह राशिफल भारतीय जनमानस में 52 वर्ण या भैरव, 64 विद्याओं, 56 अलौकिक भूविद्याओं का संधारण करता है।

वृहद् कथा – कुटिल लिपि या यवन लिपि में लिखा हुआ ग्रंथ था । इसका प्रणयन गुणाढ्य ने किया। यह यक्ष या पैशाची लिपि में लिखा गया ग्रंथ है। यह अपभ्रंश शौरसेनी का प्राचीनतम रूप है। राजा 'सूरसेन' के नाम से शौरसेनी लिपि का भारत में सूत्रपात हुआ । यह 'सुवर्ण' या सुनहरे वर्ण के थे इन्होंने श्रेष्ठ आर्यजन का विश्वनिर्माण किया।

'एक : सुपर्ण स समुद्रमाविवेश स इदं विश्वं भुवनं विचष्टै ।[3]

भारत में सिंधी से हिन्दी भाषा का सूत्रपात हुआ जो पणि थे। सोवियत रूस के कृप् और श्यप् ऋषियों ने इस वर्णमाला को पूरा वैदिक काल में गुप्त एवं अतिगुप्त रूप में स्थापित किया। अखंड भारत में सिन्धी से आशय है लंदा या लहंदा लिपि, पंजाब की टक्क, कैकेय, ब्राचड, मूरभाषा (उर्दू)[4] उर्दू, ओर्द रूसी शब्द से बन है । श्यह रूस की नदी वोल्गा के तट पर गोल्डेन (स्वर्ण) हार्ड (उर्दू) तातार जाति (पिशाच) निवास करती थी।[5]

राहुल सांकृत्यायन ने 'वोल्गा से गंगा' तक की यात्रा भारतीय आर्यों के आगमन का इतिहास वर्णित किया है। आर्य पेशावर (श्रावस्ती) परिव्राजक यायावर थे। भौगोलिक वातावरण के अनुसार विश्व में नार्दिक जर्मन 'उदीच्य पंडित' सबसे सुनेहले आर्य माने जाते हैं। प्रजापति के रूप में स्वयं को मंडित कर अपने अतिचार को बढ़ावा देते थे। पृथ्वी पर प्रजापति, पशुपति, मनु के आगमन से शासक द्वारा प्रजा पर अतिचार बढ़े मानवता शर्मसार हुई। श्रद्धा एवं ज्ञान की देवी इड़ा के उपभोग से पृथ्वी पर अतिमानवता, महाविनाश, महाविध्वंस, मृत्यु एवं भैरव क्रीड़ा का साम्राज्य भारत भूमि पर स्थापित हुआ। मनु का यह कहना पड़ा 'हम देव नहीं थे भूले थे सब भोग।'

देव प्रजाति आज भी इसे 'मधुमय' भोग भूमि मानती है जबकि यह भारत निवृत्ति मूलक **'अद्व्विस बुद्ध'** की भूमि थी जिसका आधार योगमार्ग था। कामायनी में देव सभ्यता में असुरत्व या पैशाचिक वृति सर्वत्र देखने में मिलती है देवों की कामुकता, मानव जाति के प्रति पशुभाव, हिंसा, देवों का सुरापान एवं अहंकार क्या देवों के लक्षण हैं ? कदापि नहीं –

'आज अमरता का जीवित हूँ, मैं वह भीषण जर्जर दंभ, आह। सर्ग के प्रथम अंक का अधम पात्रमय सा विष्कम्भ। (कामायनी 22/1)

श्रीमद्भगवद् गीता में इसे 'आसुरी वृति' कहा है

दंभो दर्प अतिमानवश्च क्रोधः पारूष्यमेव च

अज्ञान 'चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।।

इस प्रकार यह आभिजात या उच्च जाति, उच्च वर्ग आदि का दंभ तूर एव मूर शासक जाति में विद्यमान था। यह 'सूर्यास्त' (सिन्धी) पश्चिम भाषा का प्रयोग करते थे यह पश्चिम भाषा लहंदा या परम्परागत गुरुमुखी या सनातनी कहलाती थी, जिसे हम हिन्दी कहते है। सोवियत रूस में उज्बेक भाषा और हिन्दी समान्तर रूप में चलती है। यह जाति लाल, पीत एवं गौरवर्ण की थी। यह वीर जाति थी, वीर शब्द रूसी भाषा के 'वीरोस्' शब्द से बना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का नामकरण 'वीर गाथा काल इसी तातार लड़ाके जाति के नाम पर रखा था। पैशाची भाषा, कुट्टिल भाषा, डच भाषा, रोमन भाषा, आर्मेयिक लिपि में कूट शब्द ही इसकी पहचान करवाते हैं यथा भारतवर्ष में वर्ष शब्द का कूट अर्थ है यह कुट्टिल या वर्ण विपर्यय करके लिखा गया शब्द है । व–र–ष = वर्ण विपर्यय र–व–स = रूस देश का वाचक है । वर्ष की पहचान '6 माह का एक दिन एवं 6 माह की एक रात' अर्थात् दिन और रात का प्रतीकार्य रूप में भारत रूस के रूप में एक वर्ष देवताओं का भूमिज लोगों के 365 दिनों के बराबर है। यह देव दम्भ ही है भारतवर्ष है। क्योंकि ये सोवियत रूस में अतिप्राचीनकाल में ध्रुव देशों में 6 माह के दिन एवं 6 माह की एक रात होती थी इस की पहचान सतानती आज भी रखते हैं।

सैंधव जाति लालवर्ण की थी सैंधा नमक इसका प्रमाण है। सैंधव हैंदव या हिन्दू जाति लूटमार करने वाली एवन (यवन) जाति या शक जाति थी। इसी के बल पर भारत का राष्ट्रीय संवत् शक संवत् बना। ये पारस्य पारसी या ईरानी भाषा बोलते थे–ये यवन आचार्य थे। ये बुद्धिवादी स्तोइक थे। स्तोइकों ने तर्कशास्त्र, धर्मदर्शन एवं भौतिक शास्त्र के द्वारा विश्व का गुलाम बनाया। दर्शन एक खेत है जिसकी रक्षा के लिए तर्क एक कांटों की बाड़ है, भौतिक शास्त्र खेत की मिट्टी और आचारशास्त्र फल है।[6] भारतीय दर्शन, दास एवं नाथ, उच्च एवं निम्न वर्गों में विभक्त जातीयता का 'बिल्ली कबूतर दर्शन' है।[7] भारत के नन्दी केश्वरों (नन्दोश्वर) ने भोगवाद को नाट्यशास्त्र में स्थापित किया। 'यह शाह और केसर' (सीजर) स्वेच्छाचारी शासक थे।[8] भारत में यवन राजा मिनान्डर जिसे भारतीय आर्य भाषा में महाइन्द्र कहते हैं ने मिलिन्द–पन्हों में नागसेन से 'अध्यात्म बोध' प्राप्त किया, शास्त्रार्थ किया। यहां गुप्तकाल में राजाओं को देवताओं के रूप में मंडित किया गया। राहुल सांस्कृत्यायन ने विश्व के दर्शनों के अध्ययन के बाद स्थापित किया कि भारतीय यवन शासक थे 'लाखों यूनानी हमारे देश में आकर सदा के लिए यहीं रह गये और आज वह हमारे रक्तमांस में इस तरह घुल–मिल गये हैं कि उसका पता आँख से नहीं इतिहास के ज्ञान से मिलता है जिस तरह इनके ज्ञान का हिस्सा हमारे ज्ञान में समा गया। गंधार मूर्तिकला में जिस तरह यवन – कला को स्पष्ट और गुप्त मूर्तिकला मे अस्पष्ट छाप देखते हैं, उसी पकार हमें यह स्वीकार करने में इंकार नहीं करना चाहिए कि हमारे मठों में साधु–भिक्षु और हमारी पाठशालाओं में अध्यापक बने बैठे शिक्षित सभ्य यूनानी हमारे लिये अपने विद्वानों का भी कोई तोहफा लाये थे।[9]

शक राजाओं के नाम के पीछे शक आता है। हुष्क, जुष्क, कनिष्क, तुरूष्क, वेम, कडफिसिस आदि में हुनिष्क, वासुदेव (वसुष्क) आदि शक शासक थे। इनका उल्लेख च्यवन (यवन) रामायण में मिलता है।

रूसी शासकों, पश्चिमी क्षत्रपों के नामों को कुट्टिल या गुप्त (कोड) लिपि में 'घ्स, य्स = ज़ (Z) यस् ग्रीक के जड (ज) भारत वासियों का संकेतिक चिह्न था।[10] रूस के जार शासकों का भारत में कुट्टिल शब्द राज या राजा व्यवहृत हुआ। सिजर या सिजार शब्द भारत में केशरीनन्दन के रूप में प्रसिद्ध है 'रूसी सम्राट की उपाधि जार है' CZAR यह लेटिन शब्द caesar से निकलता है czar का z वर्ण caesar के सार के स्थानापन्न हैं (हिन्दी में उल्टा रास या रासो काव्य के लिए प्रयुक्त है) डच भाषा में keiser नार्वे में केशरी keisari (केशरी) kaisar (केशर) के 12 रूपान्तर हैं।

caisere, caysere, caiser, caisar, kayssar, keyzar, kaeiseri, koesar[11] इसका उच्चारण सिसरो, किकरो, सिजर, जार, अपभ्रंश में किको, गीगो, गोगा, गागा के रूप में होता है। अतः राहुल सांस्कृत्यायन भोलानाथ तिवारी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, उदयनारायण तिवारी एवं सुनीति कुमार चटर्जी ने इसे रूसी परिवार की भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा राहुलसांकृत्यायन ने इसे 'सनातनी रूसी भाषा'[12] तथा भारतीयों को रूसी (ऋषि) कहा। ये मंगोल (तातार), ताजिक, जॉर्जियन, उज्बेक (हिन्दी) थे भारतीय आर्य रूसियों के पूर्वज शकों की एक जाति थी।[13] शक, हूण, कुषाण, चोल, मौखरी, तोखरी, यवन, तूरमाण परस्पर गुप्त नाम बदलते थे किन्तु एक ही थे। शुंगों के बाद अनेक शक और हिन्दू ग्रीक शासक हुए।[14] इस प्रकार निश्चय ही ग्रीक और शक जनता हिन्दू जनता में खो गई। ये तजबेक पारसी आर्यन (ईरान) की तहजीब गंगा जमुनी संस्कृति के रूप में जानी जाती है।

— **डॉ. श्रवण कुमार**
सह— आचार्य, हिन्दी विभाग
भाषा प्रकोष्ठ
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.) 342001
मोबाईल : 9352671936

संदर्भ :

1. शास्त्री प्रभाकर, वर्ण समीक्षा, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, 1995, पृ. 12
2. शास्त्री प्रभाकर, वर्ण समीक्षा, वही, पृ. 12
3. शास्त्री प्रभाकर, वर्ण समीक्षा, वही, पृ. 32
4. तिवारी उदयनारायण, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1987, पृ. 199
5. तिवारी उदयनारायण, वही, पृ. 199
6. सांस्कृत्यायन राहुल, दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद, 2007, पृ. 24
7. सांस्कृत्यायन राहुल, वही, पृ. 30
8. सांस्कृत्यायन राहुल, वही, पृ. 40
9. सांस्कृत्यायन राहुल, वही, पृ. 21
10. गुलेरी चन्द्रधर शर्मा, पुरानी हिन्दी रू निबंध : कहानियाँ, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, दूसरा भाग, संवत् 2042 वि. सं., पृ. 151
11. व्यास राजशेखर, संवत् प्रवर्तक दिल्ली, पृ. 90, 91 सम्राट विक्रमादित्य, पाण्डुलिपि प्रकाशन, ईस्ट आजाद नगर,
12. सांकृत्यायन राहुल, साहित्य निबंधावली, किताब महल, इलाहाबाद, सं. 1949, पृ. 61
13. सांकृत्यायन राहुल, वही, पृ. 163
14. व्यास राजशेखर, वही, पृ. 69

Critical study of relation between Aggression and Academic Achievement among the Adolescent Students

Dr. Kavita Maruti Ghughuskar
Associate Professor

Dr. Kailas Ramesh Khonde
Associate Professor

Abstract :

Adolescence is the crucial period of every person. its the period when he is undergoing various changes such as physical, psychological and emotional changes at the same time its the time when they are on the verge of career selction. When adolescents expections are not fufilled they react in varied ways such as they become aggressive, frustrated, sometimes the commit sucide etc. Researcher wanted to know whether there is any corelation between persons agression and academic acheivement of adolescents. This paper highlights the corelation between stuents behaviour, specifically aggression and his academic achievemnet.

Introduction:

The fundamental fact of Human life is how the person lived his life than for how many years he lives. The success of a person is measured by the work he has done in his life. A person himself is the creator of his life. It depends on him, how he shapes his life & achiever success. Human life is full of up & downs but the main thing is that he should see life with positive attitude & should have strength to face the hurdles. Those who have negative attitude in life is always unhappy & their life is full of sorrows. How could be adolescents be aloof from such situations. For successful life person have to adjust with the situation & overcome the situation & this is life's reliability. But everybody cannot have this capability. Success of happy life depends on the how person behaves in the adverse conditions. Experiences in adverse conditions are educational. These experiences teach people something new. Thus adverse conditions take real test of human beings. Therefore what is the importance of adverse condition and why adverse conditions are created is to be studied.

Whatever acts we do there is some intention & in order to achieve that intension person tries his level best but his intentions may not be achieved. Many times the intensions are braked & unsuccessful knocks its door & there is uncertainty in mind & mind becomes sad

and this gives birth to frustration. When goal is not achieved, mind becomes unstable or disturbed and that state of mind is called frustration. When there is obstacle in the mind, when mind's desires are not fulfilled or there is conflict in mind. Because of this state, mind gives birth to frustration.

Adolescent is the stage when a person enters new era of a life where everything is changing i.e. physical, mental social, intellectual changes occur. Youth starts making views, and wanted to know himself, his taste, physical changes, his strengths and he wanted to know him and at this stage only he makes views regarding his attitude, social status etc. He prepares his self concept and accordingly he behaves.

Aggression may be defined operationally in terms of rude answering to elders, irritation, feeling of unfairness, carrying grudges, frequent quarrelling, broken engagement, impulses to take revenge and reactionary attitude to tradition and beliefs.

Eeffect of Aggression on students :-

If a student is continuously anxious then he will not be able to pay attention in class. If at all he sits in the class then his presence is only physical presence but his mind will swing outside the class only. Whatever taught in the class he will not be able to understand. He will not be able to know what he read. He wanted to be talented or be successful bit he will not be having that capability. He will not be able to fulfill parent's expectations. Above such types of problems may be created because of Aggression in children. So researcher finds it necessary to find the effect of aggression on the acedeemic achievement of students.

Importance and Need :

The students of XIth and XIIth class are the students between the age group of 13-19 years and this is the span of adolescence. At this age students undergo physical and mental changes. The adolescents do not think by mind they think by heart and when his ego get hurt he gets tensions and this tension results in Aggression. And when Aggression is increased adolescents get frustrated. Adolescents' whole life is disturbed due to frustration. The Aggression, frustration and self-concept effect the academic achievements of the students.

Present research is important to study how the students are affected due to Aggression, frustration and his self

concepts which is responsible for his academic achievements.

Adolescents are the fundamental base of nation. They are future citizens of the nation. They should be strong and capable to bear the responsibility and develop the nation. But if they will be frustrated they cannot bear the responsibility of good citizens then the development of nation will not be done properly.

Statement of Problem :

"Critical study of relation between, Aggression and academic achievement among the adolescent students".

Objectives :

i. To study the level of aggression adolescent students.

ii. To study the reasons of aggression in adolescent students.

iii. To study the relationship of aggression with academic achievement of adolescents.

Hypotheses :

Null Hypothesis of Aggression

There is no significant difference in the level of Aggression and academic achievement among the adolescent students.

Explanation of Important Terms :

1. Adolescent -

Age group between 12 to 18 years is called adolescent. But according to some scientists the period between 13 to 19 years is adolescent period.

In present research the students of standard XIth & XIIth in the age group of 17 to 19 are only included.

2 Aggression

Aggression is the dynamic centre of neuroses fear and Aggression both are emotional reactions to danger and both may be accompanied by physical sensations such as trembling, perspiration, violent heart beat which may be so strong that a sudden intense fear may lead to death.

According to Jerald, "Aggression is a painful uneasiness of mind concerning an impending or anticipated ill.

In the present research the aggression means the rash behavior of XI^{th} and XII^{th} Std

3. Academic Achievement

Academic achievement means the marks scored by the students of XI^{th} and XII^{th} Std in annual examination.

Scope : In the present research the

Adolescent students (Male & Female) in the age group of 17 to 19 years are of Nashik City are included.

Limitations :

1) The subject taken for the research is limited to the higher secondary schools of Nashik district only.

2) In this research the population is limited to higher secondary school of each tahsil of Nashik district.

3) In this research the selection of students of XIth & XIIth are selected randomly and are delimited to higher secondary schools only.

Research Methodology : For present research survey method is used.

Population and Sampling : All the senior secondary students of Nashik city is population for present study.

Sampling : For the present research Sampling is done by non probability sampling by lottery method. And the students of 50 KTHM college are selected as a sample.

Stastical Tools

Reason of Aggression

In the present research the researcher has studied the detail about Aggression. Researcher studied the effect of total Aggression on the academic achievement. At the same time researcher studied the correlations of factors of Aggression and academic achievements. While searching the researcher find it necessary to know why these adolescents are frustrated for this researcher prepared a personal information questionnaire. This questionnaire is given to the frustrated students and the reasons of Aggression are found out which are as follows:-

While studying the Aggression among the Rural and Urban Division adolescent. Researcher found that the students of Rural Division are more frustrated than the students of Urban Division. From this it seems that Urban Division students have more exposure and facilities are available to them then the Rural Division students. Thus Rural Division students are more frustrated than Urban Division students.

Suggestions For Further Research

1. The present research is delimited to Nashik District only but the scope of research can be extended up to state level.

2. Such type of research can be done on tribal community students.

3. It is necessary to study

correlation between attitude and Aggression.

4. It is necessary to study of correlation between creativity and Aggression.

5. Study of correlation between personality and Aggression can be done.

6. Research can be done to study the correlation between interest in school subject and Aggression.

Epilogue

Adolescence is an important stage of human life. Adolescence is that period of human life when the male and female physically, socially, emotionally and mentally shifts from childhood toward adulthood. In this period values, devotion, trust, Aggression and all the experience have long term effect on the personality of a person.

At the same time factors such as relation between father and mother, treatment given by the family members, problem in life, affection of father and mother, conflicts with friends, physical disability, treatment given to friends by family members, treatment by the teachers, awareness of social status have long term effect on Aggression and overall life of a person.

The students who are frustrated they become anxious and they express their Aggression in various ways such as hyper tension, loose self-control, forget the things etc. At the same time self-concept also plays vital role in shaping the personality of the adolescents. The self-concept of the adolescents is made when he experiences various incidents regarding values, knowledge, behaviour and he sees all these things from his point of view and accordingly his self-concept is constructed.

Thus it is the moral responsibility of the society and family to take care to give good experience to the adolescents and respect them as a person and respect their self-concept. So they will not become anxious and accordingly will not be frustrated. And such youths will play important role in nurturing the future citizens of the country. This has been proved on the basis of the evidences of this research. This is outcome of the present research.

- Dr. Kavita Maruti Ghughuskar
Associate Professor
M.V.P Samaj's, College of Education Nashik.

- Dr. Kailas Ramesh Khonde
Associate Professor
M.V.P Samaj's, College of Education Nashik.
Mobile No. 9579153374

References :

Agrawal G. (1977) **"Emotional development of the child and role of the parents"** An overview journal of child psychology Vol. No.4 pp 2-4

Ahuja G.C.(1986) **Intelligence test,** National Psychological corporation Agra.

Anjali (1995) "A Socio-Psychological Study of Self-Concept of Dalit Students", Indian Journal of Psychometry and Education, January, Vol. 26 (1), p. 49-56,

aggression among children and adolescents" Indian Educational Review, I, 70-71

Bisht A.R. (1980) **"A Study of Academic and Institutional stress in relation to school climate",** Ph.D.(Edu) Kumau University

Blackham J. G. (1968) **"The Deviant Child in the Classroom."** Wads worth Pub Co. Belmont, Cal.

Blishen Edward. (1984) **"Blond's Encyclopedia of Education"**

Boe (1977) **"Economical Procedures for the Reduction of Aggression in a Residential setting"** Mental Retardation Vol.15 (5), 25-28

Boring E.W. (1973) **"Foundation of Psychology",** New Delhi Asia Publishing Long field H.S. House. Boyd R. Mc Candless and Ellis D. Evans (1973). "Children and youth: A Psychological Development "Dryden Pres,. Hinsdale, Illinois-Atlanta.

Buch M.B. (1974) **"A Survey of Research in Education"** Baroda, Centre of Advance Study in Education, Ms University of Baroda

Chopra S.L. (1966) **"Socio economic back ground and failure in the high school examination"** Education and Psychological measurements and 2, pp. 495-497

Garrett Henry & (1981) **"Statistics In Psychology and Education"**

Garrision K.C. (1972) **"Psychology of adolescence practice"** Hall Inc. New York Pp. 309 - 313

Gates. (1964) **"Education Psychology",** New-York The Mc- Millian Co.

Ginxberg (1980) Cited in **"Adolescence"** By Gruider, R.E. John wily and sons. New York, P. 542

Hirst, P.H. (1970) **"The logic of education London"**

Hobson P (1986) The compatibility of punishment and moral Education, **"Journal of moral education"** Vol. 15 No. 3 pp. 221-223

Kadu N. M. (1996) **"Critical Study of Aggression and academic achievement on adolescent students"** Ph.D. thesis submitted to Nagpur University.

https://www.researchgate.net/publication/364366118_manasika_svasthyavara_onala'ina_siksana_parinama

https://www.researchgate.net/publication/364366367_Use_of_ICT_in_Teaching-Learning_and_Management_of_Institutions

http://hdl.handle.net/10603/3220

https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/3220#

Innovative Practices in Teacher Education

- Dr. Rajkumari Gola
Assistant Professor

Abstract :

The quality of educational process largely depends upon the quality of teacher. The superiority of any educational process mainly depends upon the excellence of teaching process and teacher. Though teaching is considered as a science and a skill, basically it is a transcendent art. It is the teacher, who intuitively designs the emergent plastic mind of the child entrusted to him. Thus, teaching is not a motorized process. Rather, it is a sophisticated, rigorous and a very challenging one. With good leadership and correct teaching methodologies, the teacher's efficacy can be enhanced. Challenges in Indian educational system have no permanent answers because of the variable nature and continuous demands of human society. The teachers in the modern era specifically 21st century will have to transact with a world different from past in respect of pedagogical and technological advancement. So, no teacher education programme can make teachers fit for all situations that they will encounter in their profession. Teachers will have to make final selections from many alternatives in the course of teaching. Therefore, it is vital for teachers to constantly reassess their alternatives. This can be done by presenting innovative ideas and practices in teacher education programme. Since teachers are of fundamental importance in enlightening the quality of education; hence, the advancement of innovative practices in teacher education is of extreme importance. This paper is designed to stimulate discussion on new ideas and innovative practices required in teacher education programme. The paper will emphasize on novel ideas and innovative practices like cooperative learning, brainstorming, constructivism, blended learning, reflective teaching etc.

Keywords : Innovative Practices, Constructivism, Blended Learning, Reflective Teaching.

Introduction: -

The progress of a nation to a great extent depends upon the quality of its teachers and for this reason teaching is being considered as the noblest of all professions. The teacher, therefore, occupies a pivotal position in the educational system as well as in the

society. But teaching is not a mechanical process. It is an intricate, exacting and a very challenging one. Though teaching is being considered as a science and skill, basically it is a sublime art; because the teacher unconsciously designs the growing plastic young mind of the child. Like an artist the teacher is also responsible for shaping or reshaping the behavior of the young ones in a socially desirable way. Thus, the teacher cannot give any shape to the young living being he comes in contact with; rather he has to be a very careful artist. Throughout history, people called teachers have played many different roles and they continue to do so today. But, today's world is passing through rapid changes and great advancements. In such a climate, even education system cannot resist change. As a result, the imperatives of new times, new demands and new visions assign more challenging role and responsibility to the teacher.

The growth of a nation depends upon the quality of education system which in turn depends on teachers and for this purpose teaching is being considered as the honorable of all professions. The teacher, therefore, occupies a crucial place in the educational system as well as in the society. But teaching is not a motorized process. It is a sophisticated, demanding and a very stimulating one. Though teaching is being considered as a science and skill, basically it is a transcendent art as it is the teacher who intuitively designs the emergent plastic mind of the child. Like an artist the teacher is also responsible for influencing or reshaping the behavior of the young ones in a socially desired way. Thus, the teacher needs to be in contact with the child so that she could shape her mind in creative way.

All through the history, people say teachers have played diverse roles and they will continue doing it. But, today's world is world of change and advancements which is passing through swift changes and abundant progressions. In such a situation, even education system cannot repel change. As a result it is the requirement of present scenario as new demands and new dreams allocate more perplexing role and responsibility to the teacher. Now a day, innovative technological development has commendably revolutionized our society. An unanticipated result of this revolution has been the development of a generation of children dependent on multidimensional, interactive media sources, a generation whose understanding and beliefs of the world differ greatly from that of the generations

preceding them. If these children are to be given education, it becomes essential to succeed in our technologically concentrated future which is global in nature, then a new system of education is required that is built on children's instinctive learning abilities and technological skill must replace our existing methods.

Since challenges in education system have no permanent answers, so, teachers themselves will have to make the final selections from many alternatives. Therefore, it is vital for teachers to persistently reconsider their choices. This can be done by presenting innovative ideas and practices in teacher education programme.

Now a day, advanced technology has effectively revolutionized human society. An unexpected by product of this revolution has been the emergence of a generation of children weaned on multidimensional, interactive media sources, a generation whose understanding and expectations of the world differ profoundly from that of the generations preceding them. If we are to give these children the education necessary to succeed in our technologically intense, global future, then a new form of educational practice that builds on children's native learning abilities and technological competence must replace our existing methods

Meaning and Concept of Innovative Practices in Teacher Education : -

There is an extensive disparity among countries with regard to the terms innovation, transformation or expansion in the teaching learning process. For example, the use of colored chalks may be regarded as being an educational innovation in some developing or under developed regions of the world, whereas in other advanced countries innovations may be regarded as to the development and use of refined technologies and methods, practices etc. In India, electronic technology has intensely entered into every area of our society. Today's generation is growing up with remote controls and they spend more time on computers, internet, playing video games etc. than reading books; even toys are now filled with buttons and lights. In such a situation, it is very essential to pay attention on "How can we educate this Modern Tech Savvy Generation?" To reply to this, a compassionate environment, one in which they can generate their own ideas; both individually and collaboratively, must be provided.

Etymologically, the word "Innovation", is derived from the Latin word

"Innovare" which means to change something into something new. It is an advancement of new ideas and practices in education and training. There has been seen a remarkable shift in the methods of education services over the years. Research and innovations play an imperative role in refining the quality of teachers training for all levels of teaching. They call to introduce new ideas and practices in classroom transaction and other curricular and co-curricular activities. The teacher's effectiveness can be enriched with good leadership and modern teaching methodologies. No teacher education programme can make teachers fit for all situations that they will encounter in their profession. Teachers will have to make the final choices from many options available. The purpose of teacher education is to make teachers who have professional competencies to lead the nation forward through their multifarious roles.

Innovative Practices in Teacher Education : -

There are some Following innovative ideas that need to be focused on Teacher Education :

1. Team Teaching, Cooperative or collaborative learning process : When teacher and students have to work under so many limitations, then the practice of "Team teaching or cooperative or collaborative teaching" is a good option. Team teaching or cooperative learning process is a team work where members support and rely on each other to complete an agreed-upon goal. Cooperative learning is a popular teaching strategy in which small teams, each with students of different levels of ability, use a range of learning activities to increase their understanding of a subject. Each member of a team is responsible not only for learning what is taught but also for helping teammates learn, thus creating an atmosphere of accomplishment. Students work on the assignment until all group members successfully understand and complete it.

2. Reflecting Teaching and Reflective Teacher Education : Reflection on one's own work is a key component of being a professional teacher. Teachers must observe their beliefs, expectations and prejudices regarding teaching and leaming and determine how these beliefs influence classroom practice. Reflection is an ordinary process that assists the development of future action from the review of past and current behavior. Reflection discusses the ongoing process of analytically examining and refining practice, taking into careful deliberation

the personal, pedagogical, societal and ethical contexts related with schools, classrooms and the multiple roles of teachers.

3. Constructivism and Teacher Education : The concept of Constructivism has evolved from cognitive psychology. Constructivist paradigm is based on the contributions of Piaget, Vygotsky, Gardner, Dewey, Tolman and many others. Thus, it is a amalgamation of many dominant viewpoints on learning. It is believed that the key element of constructivist theory is that people learn by dynamically constructing their own knowledge, comparing new knowledge with their previous understanding and using all these to come to new understanding. Constructivist learning is based on student's active participation in problem-solving and critical thinking regarding a learning activity. Students construct their own knowledge by trying ideas and approaches based on their preceding knowledge and experience, applying them to new situations and assimilating new knowledge gained with pre-existing intellectual constructs. The teacher is a facilitator who guides the student's critical thinking, analysis and synthesis abilities throughout the learning process. The teacher is also a co-learner in the process. Hence, teachers should facilitate cognitive change by awarding difficulties through specific tasks that pose problems to students. In this context, problem-solving teaching procedure is defined as a process of raising a problem in the minds of the students in such a way to stimulate purposeful, reflective thinking in arriving at a balanced solution.

4. Blended-Learning and Teacher Education : Blended-learning explains an approach to learning where teachers use technology, usually in the form of Web-Based instruction, in concert with and as a complement to live instruction, or possibly utilize components of a learner- cantered Web course with components that involve substantial instructor presence and guidance. The strength of a blended-learning approach is that it provides a means to certify learners are supported and directed as they commence independent learning tasks. Use of the Web in such settings provides many affordances for the teacher and students in the form of communication channels, information sources and management tools. These characteristics appear to make blended-learning predominantly well suited to teacher training students, especially

those in large groups where direct instructor support may be hard to deliver. Blended-learning usually describes learning that combines traditional teaching and learning methodologies with information and communication technologies. It is projected that blended learning will enrich the student learning experience; at the same time it also demands that the teachers should be trained as online facilitator.

5. Soft Skills and Teacher Education : Growth of human capital is an important asset since it energies the development of a nation. Quality human capital originates from quality education process through carefully designed and well-planned education system. Soft skills are personal attributes that improve an individual's collaborations, job performance and career prospects and hard skills which tend to be specific to a certain type of task or activity. Soft skills refer to personality traits, social gracefulness, and fluency in language, personal habits, friendliness and optimism that mark people to varying degrees. Soft skills are mostly related to teacher education programme, thus the curriculum of teacher education could add to the holistic development of human capital that can nurture economic, social and personal development. Instilling the soft skill in the curriculum of teacher education is the need of the profession for it to be successful.

Conclusion : -

In the end it can be concluded that in today's era of information and communication technology it is imperative to develop teacher for growth of society as well as for self. Education system should not be looked at provider of education only rather it should be treated as a means of achieving social elevate but also as a motive of progressions in a period of knowledge and research dominance. Innovation is the track to progress for any nation and the future of the nation is built in classrooms. It is not essential that each innovation is organized and created; it could be basic, unstructured, informal method accepted by the teacher for the sake of significant learning of the students. Hence, attention should be given to such innovative methods and new ideologies and should be incorporated in teacher development programmes.

- Dr. Rajkumari Gola
Assistant Professor
Department of Education
IFTM University, Moradabad,
Mob. 9634081865

References :

- Dutta Indrajeet, Dutta Neeti. Blended Learning- A Pedagogical Approach to Teach In Smart Classrooms. Edutracks. 2012; 11:10.
- Hassan D, Rao AV, Appa. Innovation in Teacher Education. Edutracks. 2012; 11:5.
- Karpagam S, Ananthasayanam R. Soft Skills in Teacher Education Programme. Edutracks. 2012; 11:11.
- Padmanabhan Jubilee, Rao Manjula P. Constructivist Approach and Problem-Solving Ability in Science. Journal of Community Guidance and Research. 2011; 28(1):56-70.
- Rahi Puneet. Innovations in Teaching-Learning. Edutracks. 2012; 11:11.
- Rao Ravi Ranga, Rao Digumarti Bhaskara. Methods of Teacher Training. Discovery Publishing House, New Delhi, 2004.
- Innovative Practices in Teacher Education,

  http://www.mu.ac.in/myweb_test/MA%20Teacher%20Education/Chapter-8A%20&%208B.pdf.
- Innovation and Initiatives in Teacher Education in Asia and the Pacific region, http://www.unesco.org/education/pdf/412_35a.pdf.
- 'आर्य' डॉ. मोहन लाल (2014) शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।
- 'आर्य' डॉ. मोहन लाल (2017) शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजैतिक परिप्रेक्ष्य, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो ।
- 'आर्य' डॉ. मोहन लाल (2018) शिक्षा के ऐतिहासिक, राजैतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो ।

भीम ने करी पढ़ाई ऐसी

(1)

भीम ने करी पढ़ाई ऐसी
मानवता की लड़ी लड़ाई
समतावादी पाठ पढ़ाया
ऊँच–नीच की खाई पाटी
भस्म किए मन भरे विकार
भीम ने करी पढ़ाई ऐसी
जग मे कर सका नहीं कोई।

(2)

भारत भाग्य विधाता भीम है
सबके भाग्य लिखे विधान में
सम अवसर दिया सभी को
भेदभाव नहीं रखा किसी से
सबने प्रगति की संविधान से
भीम ने करी पढ़ाई ऐसी
जग में कर सका नहीं कोई

(3)

प्रजातंत्र अपनाया भारत में
बाबा ने कानून बनाया ऐसा
निडर हो सकल करें मतदान
सबके वोट का मूल्य समान
अब शोषित भी है सरकार में
भीम ने करी पढ़ाई ऐसी
जग मे कर सका नहीं कोई।

(4)

कोटि–कोटि वंदन करते, भारत मां के उस लाल को
युगों–युगों तक याद करेंगे, मुक्त कराए मनु कारा से
अब अबला नहीं है नारी, बापू भीम ने करी पढ़ाई ऐसी
जग में कर सका नहीं कोई।

– **बी.एल. परमार**
13, भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला उज्जैन (म.प्र.)
मोबा. 8770607747

डॉ. अम्बेड़कर के अनमोल विचार

- मेरे नाम की जय-जयकार करने से अच्छा है, मेरे बताये रास्ते पर चलो।
- जो कौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह कौम कभी भी इतिहास नही बना सकती।
- अपने भाग्य के बजाय अपनी मजबूती पर विश्वास करो।
- जो धर्म जन्म से एक को श्रेष्ठ और दूसरे को नीच बनाए रखें, वह धर्म नहीं, गुलाम बनाए रखने का षड़यंत्र हैं।
- राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है, जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अंतर भूलाकर उसमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाये।
- अच्छा दिखने के लिये मत जियो बल्कि अच्छा बनने के लिये जियो।
- जो झुक सकता है वह सारी दुनिया को झुका भी सकता है।
- एक इतिहासकार सटीक, ईमानदार और निष्पक्ष होना चाहिए।
- संविधान, एकमात्र वकीलों का दस्तावेज नहीं, यह जीवन का एक माध्यम है।
- किसी भी वस्तु का स्वाद बदला जा सकता है लेकिन जहर को अमृत में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।
- न्याय हमेशा समानता के विचारो को जन्म देता है।
- ज्ञान व्यक्ति के जीवन का आधार है।
- शिक्षा जितनी पुरुषों के लिये आवश्यक है उतनी ही महिलाओं के लिये भी आवश्यक है।
- अगर कर सको तो अपनी वाणी में वह असर पैदा करो जो हवाओं को मोड़ दे।

जय भीम

भारतीय मेधा के प्रतिमान, विश्वविभूति बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर को उनकी 132वीं जयंती पर शत-शत नमन

अम्बेडकर
चूल्हे की आंच है
दीये की लौ है
क्रांति की ज्वाला है

अम्बेडकर
ममता का मरहम है
करुणा का सागर है
समता की डगर है

अम्बेडकर
एकता का दर्शन है
राष्ट्रीयता का मर्म है
मानवता का धर्म है

(अपने 'घर वापसी' कविता संग्रह से साभार)

सुदेश तनवर
14 अप्रैल 2023

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार